European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 11
November 2018

संत निश्चल दास का गद्य

प्रवक्ता – डॉ. रवि दहिया
हिन्दू कॉलेज सोनीपत। हिन्दी विभाग

संत निश्चल दास ने गद्य और पद्य में रचनाऐं की हैं। उनका 'विचार सागर' गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनो हैं। वृति प्रभाकर उनका पूरा का पूरा गद्यात्मक है, और युक्तियाँ देकर भी उन्हें गद्यात्मक रुप से समझाने का प्रयास किया है। संत निश्चल दास गद्य की महता समझते थे इसलिए उन्होंने पद्य की अपेक्षा गद्य को अधिक अपनाया। विचार सागर में पद्य बहुत ही सूक्ष्म और सूत्र रुप में है। मंद बोध जिज्ञासाओं को, उन पद्यों की विस्तृत व्याख्या बिना, उनका पूरा तात्पर्य समझ में नहीं आ सकता था। वे 'विचार सागर' में इस बात की पुि ट भी करते हैं–

'भर्‌यो वेद सिद्धान्त जल, जामैं अति गंभीर।

अस विचार–सागर कहूं, पेि ा मुदित हवै धीर।।

सूत्र भा य वार्तिक प्रभृति, ग्रंथ बहुत सुरबानि।

तथापि मैं भाषा करुँ, लि ा मति मंद अजानि।।[1]

उन्हीं के द्वारा इसकी टीका देखिएः– यद्यपि सूत्र, भाष्य, वार्तिक से प्रभृति अर्थात् आदि, सुरबानि अर्थात् संस्कृत में ग्रंथ बहुत है, तथापि संस्कृत–ग्रंथों से मंद बुद्धि पुरु ाों को (उनसे) बोध नहीं होता। और भाषा के ग्रन्थ से मंद बुद्धि–पुरु ाों को भी बोध होता है। अतः भाषा में ग्रंथ का आरम्भ नि फल नहीं। किंतु संस्कृत–ग्रंथों को विचारने में जिनकी बुद्धि समर्थ नहीं है, उनके निमित (इस) ग्रंथ का आरंभ सफल है।[2] वे जानते थे कि जब तक जिज्ञासु को सब शास्त्रों का उनके सिद्धान्तों का उनके मतभेदों का पूरा ज्ञान हो।

'कविजन कृत भाषा बहुत, ग्रंथ जगत विख्यात।

बिन विचार सागरलै ा, नहिं सदेंह नसात।[3]

---

[1] स्वामी निश्चल दास, विचार सागर– पृष्ठ –7
[2] स्वामी निश्चल दास, विचार सागर– पृष्ठ –7
[3] स्वामी निश्चल दास विचार सागर– पृष्ठ –7

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 11
November 2018

यद्यपि भाषा के ग्रन्थ बहुत है, तथापि विचार सागर पढ़ें बिना भाषा के अन्य ग्रंथों से आत्म वस्तु में संदेह दूर नहीं होता।

कितनों ने तो श्रवण करके भाषा में ग्रंथ रचे है जैसे पंचभा ा। उनकी प्रक्रिया किसी अंश में तो शास्त्रों के अनुसार है, और जो श्रवण किया, उसका अर्थ यथार्थ ग्रहण नहीं हुआ, उस अंश में ये शास्त्र से विरुद्ध हैं। अतः ऐसे श्रोता कृत ग्रंथों से (आत्म तत्व का) संदेह रहित बोध नहीं होता। जबकि कुछ भाषा ग्रंथ किंचित् शास्त्र पढ़ के रचे गए हैं, जैसे 'आत्मबोध'। उनसे भी संदेह रहित बोध नहीं होता क्योंकि उनमें वेदान्त की सम्पूर्ण प्रक्रिया नहीं है।

'विचार सागर' में सम्पूर्ण प्रक्रिया है और वेदांत शास्त्र के अनुसार है, किसी स्थान में भी (उससे) विरुद्ध नहीं। तथा आत्मज्ञान में जो पदार्थ उपयोगी हैं, उनका विस्तार से निरुपण किया है। इसलिए अन्य भाषा ग्रंथों के समान 'विचार–सागर' ग्रंथ नहीं है, किन्तु भाषा ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे उतम है, क्योंकि इसमें पद्य के साथ गद्य की व्याख्या की गई है।

निश्चल दास जी का मानना है कि किसी भी विषय से संबंधित अन्य ग्रंथों का भी ज्ञाना होना आवश्यक है। जैसे कि वेदान्त के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों में 'ख्याति' चार मानी है, वेदान्त ने पांच मानी है। यदि उन चार प्रकार की ख्यातियों का केवल नाम देकर ही छोड़ दिया जाता, तो उन चार ख्यातियों के लक्षण उनका परस्पर भेद जानने के लिए जिज्ञासुओं को उन शास्त्रों और उनके भा यों के पन्ने पलटने पड़ते। उन अन्य शास्त्रों का अध्ययन तथा श्रम पूर्वक अवगाहन किए बिना उनके ख्यातियों के लक्षण तथा उनके परस्पर भेद का ज्ञान नहीं हो सकता था। इसलिए स्वामी जी ने, उनकी विस्तृत व्याख्या 'विचार सागर' में पहले देकर तत्पश्चात् अनिर्वचनीय ख्याति को टीका में दिया है। जिससे इन अन्य शास्त्रों का अवगाहन किए बिना ही 'विचार–सागर' का अध्ययन करने से ही जिज्ञासु की समझ में आ जाए। कि अन्य शास्त्र उन ख्यातियों के बारे में क्या कहते हैं, और वेदांत अनिर्वचनीय ख्याति के संबंध में क्या कहता है, और यह सब जानकर जिज्ञासु अपनी राय बना सके कि सिद्धांत क्या है। किस सिद्धान्त को उतम माने और ऐसा क्यों माने। उदाहरणतः

ख्याति अनिर्वचनीय लि ा, पंचम तिन तै ओर।

ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 11
November 2018

युक्तिहीन मति च्यारि ये, मानहु भ्रम की ठोर।[4]

उन चार ख्यातियों से अतिरिक्त पाँचवी ख्याति अनिवर्चनीय भ्रम के (ठौर) स्थान में और लखि (मान)। और असत् ख्याति, आत्म ख्याति, अन्यथा ख्याति, अख्याति ये चारों मत युक्तिहीन है। जैसे अख्याति मत निरुपण में (पूर्व) तीन गत असंगत कहे, वैसे ही अख्याति मत भी असंगत है। क्योंकि, ''यह सर्प है'' इस ज्ञान में प्रथम 'यह' अंश तो रज्जु का सामान्य ज्ञान प्रत्यक्ष है। और 'सर्प' है। इतना अंश पूर्व दृ ट सर्प का स्मरण ज्ञान है। यह अख्यातिवादी का मत है।[5] इसी कारण निश्चलदास जी की टीका विचारोत्मक भी है और गद्य रुप भी है। जिससे गद्य की महता प्रतिपादित होती है।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है 'वृति प्रभाकर' पूरा का पूरा ग्रंथ गद्य में लिखा गया है। यह ग्रंथ पाण्डित्य का ग्रन्थ है। इसके श्रवण और मनन से न्याय सांख्य आदि सभी ाास्त्रों का सम्यक् बोध हो जाता है। वेदान्त का यह सिद्धान्त है कि वृति में ही संसार रुप बंध है और वृति में ही मोक्ष है। इस वृति में शैली की दृि ट से एक अद्भुत मौलिकता एवं अनुक्रम का अनुबंध प्रस्तुत किया गया है। प्रथम न्याय शास्त्र की रीति से प्रत्येक प्रमाण का सविस्तार वर्णन किया गया है। तदुपरान्त उसी प्रमाण के संबंध में न्याय से वेदांत की विलक्षणता निरुपित की गई है। तदनन्तर ब्रह्मज्ञान में उस ज्ञान की क्या उपयोगिता है? यह स्प ट किया गया है।

यह तथ्य बहुत स्प ट है कि निश्चल दास जी वेदान्त को मानने वाले थे। पर उन्होंने अपने 'विचार सागर' में वेदान्त की रीति से उपमिति का स्वरुप न लिखकर न्याय की रीति से उपमिति का स्वरुप लिखा है।[6] इसका अभिप्राय है कि यदि न्याय की रीति से उपमिति का स्वरुप माना जाए तो भी अद्वैत सिद्धान्त में कोई हानि नहीं होती। क्योंकि न्याय मत में सादृश्य ज्ञान से ही नहीं, अपितु वैधर्म्य ज्ञान से भी उपमिति मानी गई है।

'युक्ति प्रकाश ' भी संत निश्चल दास ने गद्य में लिखा है। इसमें युक्तियाँ देकर उनकी व्याख्या दी गई है। देखा जाए तो निश्चल दास जी एक ऐसे लब्ध प्रति ठ लेखक है कि जिन्होंने गद्य तथा पद्य दोनों ही शैलियों में बड़े ही अधिकार के साथ वेदान्त साहित्य की रचना की है। इस संदर्भ में रणजीत सिंह कहते है कि यह एक महान आश्चर्य की बात है कि जिस वेदान्त संबंधी विचारों की उलझनों को सुलझाने के लिए

[4] स्वामी निश्चल दास, विचार सागर– पृष्ठ –84
[5] स्वामी निश्चल दास, विचार सागर– पृष्ठ –84
[6] स्वामी निश्चल दास ग्रन्थावली, रणजीत सिंह पृ0–42

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 06 Issue 11
November 2018

संस्कृत साहित्य लिखा गया, उन विद्वानों की मुक्ति विवेचना एक ऐसी भाषा में स्टीक रुप में प्रस्तुत की जबकि उस भाषा (हिन्दी) गद्य का गद्य साहित्य अपने शैशव में अगड़ाइयों ले रहा था।[7]

उनके गद्य की भाषा देखी जाए तो उसके दो रुप सामने आते है। एक वह रुप जो 'विचार सागर' और 'युक्ति प्रकाश' में है, तथा दूसरा वह रुप जो 'वृति प्रभाकर' में देखने को मिलता है। 'विचार सागर' तथा 'वृति प्रभाकर' की रचना साधारण जिज्ञासुओं के लिए की गई है, उसमें सरल से सरल भाषाएवं वाक्य पदावली का प्रयोग किया गया है वाक्प रचना लम्बी न होकर छोटी है।

'वृति प्रभाकर' का गद्य 'विचार सागर' और 'युक्ति प्रकाश' की अपेक्षा कुछ कठिन है। क्योंकि इसकी रचना विद्वानों के लिए की गई है।

संत निश्चल दास जी ने अपनी भाषा में स्थान पर मैं को के स्थान पर कूँ और के स्थान पर औ, क्योंकि के स्थान पर काहै तै, आदि का जानबूझ कर प्रयोग किया है, वह कुछ ऐसे स्थानीय शब्द है जो कि बलात् उनकी रचनाओं में आ गए है। ये शब्द उनकी कृतियाँ में ग्रामीण वातावरण के कारण घुसपैठ कर गए है। क्योंकि उन्होंने अपने बहुत सा समय किहड़ौली (खरखौदा) जिला सोनीपत में व्यतीत किया था। अतः उनकी रचनाओं में स्थानीय बांगरु बोली के कुछ शब्दों का आ जाना आश्चर्य की बात नहीं है। जैसे उन्होंने रस्सी के लिए जेबड़ी[8] पहचाने के स्थान पर पिछानै[9] नियम के स्थान पर नेम[10] स्तन के स्थान पर बोबा[11] भागना के स्थान पर भाजना, प्रकाश के स्थान पर उजियारा[12] चार के स्थान पर च्यारि[13] आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

भारतीय वाड्.मय में दार्शनिक विचारों को करने के लिए अनेक प्रकार की शैलियां चली आ रही हैं। इनमें सबसे प्राचीन 'औपनि াद औपदेशिक' शैली है। इसी का अन्य नाम 'प्रश्न परि प्रश्न' शैली भी है। इस शैली का श्रवण में अधिक महत्व है। इसके उपरान्त दार्शनिक विचारों को अनुस्यूत करने वाली 'सूत्र' शैली के दर्शन होते है। समास াক্তি और अर्थ गाम्भीर्य इस शैली की प्रमुख विशे াताए है। यह शैली लेखन की

[7] संत निश्चल दास का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व पृष्ठ –88
[8] संत निश्चल दास ग्रन्थावली– डॉ0 रणजीत सिंह, पृष्ठ – 65
[9] विचार सागर, संत निश्चल दास – पृष्ठ – 64
[10] विचार सागर, संत निश्चल दास – पृष्ठ – 314
[11] विचार सागर, संत निश्चल दास – पृष्ठ –152
[12] संत निश्चल दास ग्रंथावली – डॉ0 रणजीत सिंह – पृष्ठ –133
[13] विचार सागर, संत निश्चल दास – पृष्ठ –64

दृि ट से बड़े महत्व की है। सूत्र शैली ने 'वृति' और वार्तिक शैली को भी जन्म दिया है। दर्शन तथा व्याकरण संबंधी सूत्रों ने अपनी संक्षिप्ता के गर्भ से अनेक नूतन विचारकों को जन्म दिया है।

इन विचारकों ने सूत्र भावों को सागर कह कर अपने बुद्धि ग्राह्य सिद्धान्तों को विस्तार के साथ प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया। इन ौलियों को व्याख्या शैली, भा य शैली, टीका शैली, वृति शैली, कारिका शैली आदि नाम दिए जा सकते है। संत निश्चलदास के गद्य में इन शैलियों का दिग्दर्शन मिलता है।''